The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 2 | February 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

स्मृति साहित्य एवं पुरुषार्थ चतुष्टय

सोम्यरंजन बड़पंडा

शोधछात्रः साहित्यविभागः

श्रीलालबहादूरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली-११००१६

Gmail – somyaranjanbarpanda26@gmail.com

पल्लवी जेना

धर्मशास्त्र विभाग

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 11-02-2025

Published: 14-03-2025

Keywords:

पुरुषार्थ,धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, स्मृति,नैतिकता

ABSTRACT

स्मृति साहित्य हिन्दू धर्म और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो वेदों के बाद विकसित हुआ और सामाजिक, नैतिक, धार्मिक तथा विधि-संबंधी नियमों का संग्रह प्रस्तुत करता है। स्मृति शब्द का अर्थ है "स्मरण" या "याद किया हुआ ज्ञान"। भारतीय दर्शन एवं संस्कृति में स्मृति साहित्य तथा पुरुषार्थ चतुष्टय का महत्वपूर्ण स्थान है। स्मृति साहित्य में समाज की व्यवस्था, नैतिकता, धर्म तथा व्यवहारिक जीवन के नियमों का वर्णन मिलता है, वहीं पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) जीवन के लक्ष्य एवं उनके संतुलन को परिभाषित करता है।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15031910

प्रस्तावना

स्मृति साहित्य विविध ग्रंथों का एक संग्रह है जिसमें छह वेदांग, महाकाव्य, महाभारत और रामायण, धर्मसूत्र और धर्मशास्त्र (या स्मृतिशास्त्र), अर्थशास्त्र, पुराण, काव्य या काव्य साहित्य और राजनीति, नीतिशास्त्र, संस्कृति, कला और कई सामाजिक विषय निहित हैं। भारतीय संस्कृति में जीवन का उद्देश्य केवल सांसारिक भोग या मोक्ष प्राप्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि एक संतुलित जीवन जीने की अवधारणा है। यह संतुलन पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। इन सिद्धांतों को स्पष्ट करने में स्मृति साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

स्मृति साहित्य वे ग्रंथ हैं जो वेदों की शिक्षाओं की व्याख्या करते हैं और समाज में नैतिकता, कर्तव्य, और व्यवहार संबंधी नियमों को स्थापित करते हैं।

पुरुषार्थ चतुष्टय की अवधारणा

मानवजीवन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये चार प्रकार के पुरुषार्थों की कल्पना की है जिनका परिगणन अग्निपुराण में इसप्रकार में किया गया है-

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ही मनुष्य के उद्देश्य हैं।

पुरुषार्थ के चार स्वरूपघटक तत्त्वों में से काम और अर्थ साक्षात् प्रवृत्ति मार्ग का सूचक है। मोक्ष निवृत्ति या श्रेयमार्ग का सूचक हैं। धर्म का ग्रहण काम और अर्थ के साथ किया जाता है। धर्म, अर्थ और काम त्रिवर्ग के नाम से भी प्रसिद्ध है। इसके साथ, मोक्ष के सन्दर्भ में भी धर्म एक परिहार्य अंग है। इस विषय पर चर्चा आगे की जायेगी। यहाँ यह जानना महत्त्वपूर्ण है कि धर्म, कान, अर्थ तथा मोक्ष के मध्य में सामंजस्य स्थापित करता है। समुदित रूप से इन तीनों का उद्देश्य सामान्य मनुष्य के जीवन को सुव्यवस्थित करना तथा समाज को सुस्थिर करना है तथा मोक्ष का उद्देश्य व्यक्तिविशेष का आध्यात्मिक विकास करना है। ये चारों ही समाहार रूप से पुरुषार्थ चतुष्ट्य एवं चतुर्वर्ग के नाम से भारतीय ज्ञान परम्परा में स्वीकृत हैं।

शरीर भारतीय मनीषियों के अनुसार, शरीर तथा आत्मा का घनिष्ठ सम्बन्ध है। शरीर भौतिक है तथा आत्मा आध्यात्मिक है। धर्म, अर्थ, काम-मनुष्य के भौतिक सुखों के साधन हैं। ये तीनों एक-दूसरे के पूरक हैं। शरीर में रहने के कारण जीवात्मा काम अर्थात् सुखोपभोग को जीवन का प्रथम लक्ष्य मानता है। सुखोपभोग के लिये अर्थ की आवश्यकता होती है। यह अर्थप्राप्ति सदैव धर्मपूर्वक होना चाहिये। इस प्रकार धर्म से युक्त अर्थ एवं धर्म से युक्त काम इसरूप में धर्म, अर्थ, काम ये तीनों पारस्परिक रुप से सम्बद्ध हैं। महाभारत, स्वर्गारोहण पर्व, 5.62 में भी कहा गया है कि धर्म से ही अर्थ और काम की प्राप्ति करो- "धर्मादर्थश्च कामश्च स धर्मः किं न सेव्यते। अतः प्रथम तीन वर्ग मनुष्य के भौतिक सुख के साधन हैं। इनसे प्राप्त होने वाला सुख पूर्ण सन्तुष्टि तथा परम आनन्द का साधन नहीं है। अपितु इन तीनों से प्राप्त होने वाला सुख और भोग शाश्वत न होकर क्षय होने वाले हैं। एकमात्र मोक्ष ही है, जिससे प्राप्त होने वाले सुख नित्य होता है। इसकी प्राप्ति होने पर दुख तथा असन्तुष्टि का सदैव के लिये नाश हो जाता है। अतः मोक्ष नामक अन्तिम पुरुषार्थ को परनपुरुषार्थ माना गया है। ज्ञातव्य है कि वर्गचतुष्ट्य का महत्त्व तभी है, जब मनुष्य इनका पालन एकांगी रुप में न करके सर्वांगीण रूप में करे। अतः ये समुदित रुप से चतुर्वर्ग के रुप में प्रसिद्ध है, पृथक-पृथक रूप में इन चारों की महत्ता नहीं है। वर्गचतुष्टय प्रवृत्ति मार्ग और निवृत्ति मार्ग के मध्य में समन्वय स्थापित करने का माध्यम है। इस प्रकार, धर्म से नियन्त्रित अर्थ और काम का सेवन करने वाला निष्काम कर्मयोगी अथवा अध्यात्म ज्ञान से सम्पन्न महात्मा ही इसका अधिकारी बन सकता है। पुरुषार्थ का अर्थ है "मनुष्य के प्रयासों द्वारा प्राप्त किए जाने वाले लक्ष्य"। भारतीय दर्शन में चार प्रकार के पुरुषार्थ बताए गए हैं:

धर्म (नैतिकता एवं कर्तव्य)

धर्म का अर्थ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि नैतिकता, सत्य, एवं न्याय से है। मनुस्मृति में कहा गया है:

"धारणाद्धर्म इत्याहु धर्मो धारयते प्रजाः।"

(अर्थात, जो संपूर्ण समाज को धारण करता है, वही धर्म है।)

संस्कृत के धृ धारणे धातु से मन् प्रत्यय लगाने पर धर्म शब्द की पुल्लिङ्ग अर्थ में निष्पत्ति होती है। धर्म का अर्थ होता है- धारण करना। अतः जिसे धारण किया जाये यह धर्म है। वामन शिवराम आप्टे के द्वारा रचित संस्कृत हिन्दी शब्दकोश, पू.सं. 489 के अनुसार धर्म का स्वरूप है-ध्रियते लोकोऽनेन, धरति लोकं वा। अतः धर्म ऐसा तत्त्व है, जो व्यक्ति को देशकालानुसार आचरण की प्रेरणा देकर समाज में रहने के योग्य बनाता है। स्पष्ट है कि धर्म यहाँ साम्प्रदायिक अर्थ में नहीं है. अपितु धर्म का अर्थ उन गुणों को धारण करना है जिनसे मनुष्य अभ्युदय और निःश्रेयस को प्राप्त करता है। धर्म के बिना अर्थ और काम दिशाहीन हो सकते हैं।

अर्थ (संपत्ति एवं धन)

जीवनयापन के लिए धन आवश्यक है, लेकिन धर्म के अनुसार अर्जित करना चाहिए। मनुस्मृति में कहा गया है:

"अर्थार्थी लोकमव्याप्य धर्मार्थी चात्मनः श्रियं।

(धन अर्जन में समाज का भी हित हो, न कि केवल स्वयं का लाभ।)

अर्थ शब्द का अभिप्राय है- अभिलषित वस्तु। कृषि, वाणिज्य, व्यवसाय आदि द्वारा द्रव्यों का अर्जन कर ऐहिक उन्नति करना अर्थ का तात्पर्य है। अतः अर्थ सभी को अभिप्रेत है। अर्थ, द्रव्य तथा धन पर्यायवाची हैं। इसके द्वारा मनुष्य के इस लोक और परलोक के समस्त प्रयोजन सिद्ध होते हैं। व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा सामाजिक स्तर पर अर्थ के द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए व्यक्ति जीवनयापन करता है। अर्थ वह वस्तु है, जिसपर मनुष्य की जीविका चलती है। भारतीय ज्ञानपरम्परा में अर्थ के स्वरूप में भी वैविध्य है। यह भौतिक सुख-साधन की प्राप्ति का मूलभूत स्रोत है। याज्ञवल्क्य स्मृति में न्यायसंगत व्यापार और शासन व्यवस्था के नियम बताए गए हैं।

काम (इच्छाएँ एवं भौतिक सुख)

काम का अर्थ केवल शारीरिक इच्छाओं से नहीं, बल्कि सभी इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओं, एवं भावनात्मक संतोष से भी है।काम्यते इति कामः" इस व्युत्पत्ति के अनुसार, विषय और इन्द्रियों के सम्पर्क से उत्पन्न होने वाली इच्छा ही काम है। दूसरे शब्दों में, सुख भोग रूपी आनन्द का अनुभव करना काम है। संसार के विषयों को भोगने की इच्छापूर्ति का दूसरा नाम काम है। इन्द्रियों और मन के साथ सम्पर्क स्थापित करके उनके द्वारा आनन्द का अनुभव होता है। वात्स्यायन ने कामसूत्र में कहा है कि पाँच ज्ञानेन्द्रियों की अपने मन के संकल्प के अनुसार अपने अपने विषयों के प्रति सुखानुभूति के कारण जो प्रवृत्ति होती है, उसे काम कहते हैं। इन्होंने काम शब्द का द्विविध अर्थ बताया है- विस्तृत अर्थ तथा संकुचित अर्थ। विस्तृत अर्थ में काम शब्द का

प्रयोग हमारी सारी इन्द्रियों से प्राप्त सुख के लिये होता है। संकुचित अर्थ में काम शब्द का प्रयोग यौन सुख के अर्थ में है। महाभारत, वनपर्व, 33.3 में कहा गया है कि पुष्पमाला, चन्दन, वनिता आदि प्रिय पदार्थों के स्पर्श एवं सुवर्ण आदि का संयोग होने से मन में जो एक विशेष प्रकार की प्रीति उत्पन्न होती है, वह चित्त का एक प्रकार का विशेष प्रकार का संकल्प है, जिसे काम कहते हैं, चक्षु से उसका रूप हम देख नहीं पाते हैं, किन्तु अनुभव कर पाते हैं ।धर्म के अनुरूप काम का पालन करने से यह जीवन में आनंददायक बनता है।

मोक्ष (आध्यात्मिक मुक्ति)

मोक्ष का अर्थ जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति प्राप्त करना है। भगवद गीता में कहा गया है:

"न जायते म्रियते वा कदाचिन्ह नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।"

(आत्मा न जन्म लेती है, न मरती है, वह अमर है।)

मुच्यते सर्वैर्दुःखबन्धनैर्यत्र स मोक्षः इस व्युत्पत्ति के अनुसार, जिस पद को पाकर जीव समस्त दुख एवं बन्धनों से मुक्त हो जाता है, वह मोक्ष है। यही मुक्ति भी है। सांसारिक बन्धनों से मुक्ति मोक्ष की अवधारणा है। बन्धन परतन्त्रता का सूचक है। मोक्ष स्वतन्त्रता है। मोक्ष एवं परमार्थ एक ही सत्ता के सूचक हैं। मोक्ष अध्यात्म की पराकाष्ठा है, अतः इसे परम पुरुषार्थ भी कहते हैं। निःश्रेयस, कैवल्य, अपवर्ग, परम पुरुषार्थ आदि मोक्ष के समानार्थक शब्द हैं। इससे बढ़कर संसार में श्रेष्ठ और दूसरा मूल्य नहीं है। भारतीय दार्शनिक चिन्तकों के अनुसार, मनुष्य केवल भौतिक शरीरमात्र का पुंज नही है, अपितु उसमें अनन्त शक्ति वाली सूक्ष्म आत्मा भी है, जो स्वरूपतः अनन्त ज्ञान, शान्त और पूर्ण आनन्द वाली है। आत्मा के इस स्वरूप का सम्बन्ध ब्रह्म या परमात्मा से जोड़ा जाता है। आत्मा तथा परमात्मा के सम्बन्ध की प्रत्यभिज्ञा निर्वाण, मोक्ष या मुक्ति है। मोक्ष दर्शन का मुख्य विषय है। प्रत्येक दर्शनविशेष के मूलभूतसिद्धान्तों के आधार पर आत्मा, परमात्मा, इन दोनों के मध्य का सम्बन्ध तथा मोक्ष का स्वरूप भी अलग अलग है। किन्तु चार्वाक दर्शन को छोड़कर, लगभग सभी भारतीय दर्शनों में इस बात पर सहमति है कि आत्मा शरीर, इन्द्रिय और मन से भिन्न है, परन्तु अज्ञानता के कारण वह शरीर, इन्द्रिय अथवा मन से अपना पार्थक्य नहीं समझ पाती है।स्मृति ग्रंथों में मोक्ष प्राप्ति के लिए ज्ञान, भक्ति और योग के मार्ग बताए गए हैं।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पुरुषार्थ चतुष्टय

आज के समाज में पुरुषार्थ चतुष्टय की अवधारणा अत्यंत प्रासंगिक है:

1. धर्म: नैतिकता, न्याय और सामाजिक मूल्यों का पालन करना आवश्यक है।
2. अर्थ: धन कमाने के लिए नैतिक मार्ग अपनाना आवश्यक है, अन्यथा भ्रष्टाचार और आर्थिक असंतुलन बढ़ सकता है।
3. काम: इच्छाओं की पूर्ति आवश्यक है, लेकिन लालच और भोगवाद से बचना चाहिए।

4. मोक्ष: मानसिक शांति और आध्यात्मिक उन्नति पर ध्यान देना चाहिए, जिससे तनाव मुक्त जीवन संभव हो सके।

निष्कर्ष

पुरुषार्थ चतुष्टय केवल धार्मिक या दार्शनिक अवधारणा नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की कला को परिभाषित करता है। स्मृति साहित्य और पुरुषार्थ चतुष्टय भारतीय सांस्कृतिक एवं नैतिक परंपराओं का आधार हैं। ये ग्रंथ जीवन को संतुलित एवं सार्थक रूप से जीने की प्रेरणा देते हैं। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष का समुचित समन्वय व्यक्ति के आध्यात्मिक एवं भौतिक जीवन को संतुलित करने में सहायक होता है। अतः, स्मृति साहित्य का अध्ययन पुरुषार्थ चतुष्टय के सिद्धांतों को समझने एवं जीवन में उनके व्यवहारिक अनुप्रयोग को स्पष्ट करने में सहायक सिद्ध होता है।यदि मनुष्य धर्म को आधार बनाकर अर्थ और काम की प्राप्ति करे, तो अंततः मोक्ष की ओर भी अग्रसर हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथसूची

1. **मनुस्मृति** (अध्याय 2, श्लोक 1-12)
2. **याज्ञवल्क्य स्मृति** (अध्याय 1, श्लोक 5-10)
3. **नारद स्मृति** (न्याय शास्त्र खंड)
4. **भगवद गीता** (अध्याय 2, श्लोक 20)
5. **भारतीय दर्शन ग्रंथ,** प्रो. सुरेश शर्मा

1) रुपचन्द्रिका – डॉ. सुखराम:, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली,2015

2) व्याकरण दर्पण – प्रो. डॉ. गोपाल कृष्ण दाश- पुस्तक भवन, भुवनेश्वर,2016

3) अमरकोषः – डॉ. ब्राह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी,2012

4) वैदिक व्याकरण, डॉ. उमेशचंद्र पाण्डेय, चौखंबा पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2013

5) मनुस्मृति – श्रीमती उर्मिला रस्तोगी, जेपी पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2003

6) याज्ञवल्क्यस्मृतिः, नारायण राम आचार्य,नाग पब्लिशर्स, दिल्ली, 2003

7) मनुस्मृति – डॉ. राकेश शास्त्री, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली,2018

8) मनुस्मृतिः – चतुर्थ अध्याय, पंडित श्री जगन्नाथ शास्त्री, तैलंग, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, 2011

9) धर्मसंहितादशकम् – प्रो. रमेश कुमार पाण्डे, अमरग्रन्थ पब्लिकेशनस् नई दिल्ली, 2006

10) निर्णयसिंधुः – म. म. श्रीव्रजरत्नभटाचार्य, चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी, 2019

11) धर्मसूत्रों का महत्व (वर्तमान परिप्रेक्ष में), डॉ. नयनतारा, भारतीय विद्या प्रकाशन वाराणसी, 2003

12) मनुस्मृति - श्रीमती उर्मिला रस्तोगी, जेपी पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2003